1 तीमुथियुस श्रृंखला

अध्याय 1: शुद्ध मन, शुद्ध विवेक और निष्कपट विश्वास

रविवार, 19 मार्च, 2017

पृष्ठभूमि

(नोट: यह ऐतिहासिक सामग्री ए.पी.सी. के नि:शुल्क प्रकाशन "बेदारियां, परमेश्वर की मुलाकात और कार्य" से ली गई है)

पौलुस और तीमुथियुस

अपनी **प्रथम मिशनरी यात्रा** (ईस्वी सन् 44 - ईस्वी सन् 46; प्रेरितों के काम 13:1-प्रेरितों के काम 14:28) के दौरान पौलुस ने बरनबास के साथ गलातिया नामक क्षेत्र का दौरा किया, जहाँ उन्होंने इकुनियम, लुस्त्रा और दिरबे के तीन शहरों में कलीसियाओं की स्थापना की।

पौलुस की **द्वसरी मिशनरी यात्रा** (ईस्वी सन् 49-ईस्वी सन् 52; प्रेरितों के काम 15:36–प्रेरितों के काम 18:22) लगभग 3 वर्षों तक चली, जिसके दौरान पौलुस और उनके दल ने एशिया माइनर और यूरोप के कई स्थानों का भ्रमण किया और कई स्थानीय कलीसियाओं को स्थापित किया। पौलुस दिरबे और लुस्त्रा (गलातिया क्षेत्र) आए जहाँ उन्होंने **तीमुथियुस** पर ध्यान दिया और उसे अपने दल में शामिल कर लिया (प्रेरितों के काम 16:1-5)। इस समय तीमुथियुस की **आयु लगभग 17 वर्ष** रही होगी। हम जानते हैं कि तीमुथियुस के पिता यूनानी थे और उसकी माता यहूदी थी (प्रेरितों के काम 16:3, 2 तीमुथियुस 1:5, 2 तीमुथियुस 3:15)। पौलुस ने तीमुथियुस का खतना करवाया ताकि वह यहूदियों के बीच सेवा कार्य कर सके। यह **लगभग ईस्वी सन् 49** की बात है और इसके बाद से तीमुथियुस पौलुस के साथ यात्रा और सेवा करता है।

इफिसुस की कलीसिया

पौलुस ने अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान इफिसुस में थोड़ी देर के लिए ठहराव किया (प्रेरितों के काम 18:18-19)। पौलुस ने इफिसुस के आराधनालय में उपदेश दिया (प्रेरितों के काम 18:19), लेकिन यरूशलेम पहुँचने की अपनी योजना के कारण वह इस बार इफिसुस में अधिक समय तक नहीं रुका। उसने अक्विला और प्रिसकिल्ला को इफिसुस में ही छोड़ दिया (प्रेरितों के काम 18:19) और यरूशलेम की ओर आगे बढ़ गया।

पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा (ईस्वी सन् 53-ईस्वी सन् 58; प्रेरितों के काम 18:23–प्रेरितों के काम 21:15) के दौरान वह **इफिसुस शहर आया, जहाँ उसने लगभग 3 वर्ष बिताए**; इस तीसरी मिशनरी यात्रा का अधिकांश समय यहीं बीता। पौलुस ने तीन महीने तक आराधनालय में उपदेश दिया (प्रेरितों के काम 19:8), फिर वहाँ से अलग होकर वह तुरन्नुस की पाठशाला में प्रतिदिन तर्क-वितर्क करने लगा (प्रेरितों के काम 19:9)। यह क्रम लगभग दो वर्षों तक चला और प्रभु का वचन पूरे आसिया में फैल गया (प्रेरितों के काम 19:10)।

- प्रकाशितवाक्य 2 और 3 में वर्णित "आसिया की सात कलीसियाएं" (इफिसुस, स्मुरना, परगमुम, थुआतीरा, सरदीस, फिलादिलफिया, लाओदीकिया) इसी क्षेत्र में स्थित थीं और संभवतः इसी दौरान स्थापित हुई थीं। जब पौलुस तुरन्नुस के प्रवचन कक्ष में शिक्षण दे रहा था, तब उसके सहकर्मियों और अन्य लोगों ने सुसमाचार प्रचार किया होगा और अन्य शहरों में कार्य की स्थापना की होगी।
- इफिसुस शहर आसिया माइनर का एक महत्वपूर्ण शहर था, जो आसिया के पहले और सबसे महान महानगरों में से एक था, जिसकी अनुमानित जनसंख्या लगभग 2,25,000 थी। इफिसुस में **अर्तुमीस**

(डायना) का मंदिर उस समय की सबसे बड़ी इमारत थी, और यह संसार के सात अजूबों में से एक था। मंदिर का निर्माण शुद्ध संगमरमर से किया गया था, और वहाँ तक पहुँचने के लिए संगमरमर से पक्की सड़क बनी हुई थी। इसके निर्माण में लगभग 220 वर्ष लगे थे। मंदिर में अर्तुमीस की मूर्ति थी, जिसके बारे में इफिसियों का मानना था कि वह आकाश से गिरी थी (प्रेरितों के काम 19:35)।

- इफिसुस में उन्होंने कई युवा अगुवों को प्रशिक्षित किया, जिनमें बिरीया का सोपत्रुस, थिस्सलुनीकियों में से अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस, दिरबे का गयूस, लुस्त्रा का तीमुथियुस, और आसिया का तुखिकुस और त्रुफिमुस (प्रेरितों के काम 20:4) और कुरिन्थुस का इरास्तुस (प्रेरितों के काम 19:22, रोमियों 16:23) शामिल थे। वह फिलेमोन और इपफ्रास से भी मिले, जो दोनों कुलुस्से शहर के थे, जो इफिसुस से लगभग 100 मील पूर्व में स्थित था। कुलुस्से की कलीसिया इपफ्रास द्वारा स्थापित की गई थी। तीतुस भी इस दल का हिस्सा था जिसने इस दौरान इफिसुस में पौलुस के साथ कार्य किया।
- पौलुस ने इफिसुस के विश्वासियों की रखवाली के लिए 'प्राचीन' या 'अध्यक्ष' नामक अगुवों को भी खड़ा किया।
- बाद में, अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के अंत में, यरूशलेम जाते समय, पौलुस ने मिलेतुस में इफिसुस की कलीसिया के प्राचीनों से मुलाकात की (प्रेरितों के काम 20:17-38)। यहाँ पौलुस ने कलीसिया के प्राचीनों को एक प्रभावशाली संदेश दिया।

पौलुस, कैसरिया में कैदी (ईस्वी सन् 58-ईस्वी सन् 60)

अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा और यरूशलेम की यात्रा के बाद, पौलुस को लगभग 2 वर्षों तक कैसरिया में कैद रखा गया। इसके बाद उसे रोम ले जाया गया और वहां अन्य दो वर्षों के लिए कैद किया गया।

पौलुस की रोम यात्रा और रोम का कारावास (ईस्वी सन् 60-ईस्वी सन् 63; प्रेरितों के काम 27:1- प्रेरितों के काम 28:31)
पौलुस के रोम के कारावास के दौरान तीमुथियुस भी उसके साथ था।
रोम के कारावास के इसी समय के दौरान पौलुस ने वे पत्रियाँ लिखीं जिन्हें हम 'जेल की पत्रियाँ' कहते हैं, अर्थात्: कुलुस्सियों, फिलेमोन, इफिसियों और फिलिप्पियों।

तीमुथियुस को पौलुस की पत्रियाँ

पौलुस के अंतिम वर्ष (ईस्वी सन् 63-ईस्वी सन् 67)

- पौलुस के पहले रोम के कारावास से रिहा होने के बाद (ईस्वी सन् 63-ईस्वी सन् 67), उसने और तीतुस ने थोड़े समय के लिए क्रेते में कार्य किया (तीतुस 1:5), जिसके बाद पौलुस ने तीतुस को कार्य जारी रखने के लिए क्रेते में ही रहने दिया (तीतुस 1:5; 2:15; 3:12-13)।
- यह संभव है कि पौलुस इस समय तीमुथियुस के साथ इफिसुस की यात्रा पर गया हो और इफिसुस के कार्य की देखरेख के लिए उसे वहीं छोड़ दिया हो, जबकि पौलुस स्वयं मकिदुनिया चला गया (1 तीमुथियुस 1:3)।

- **पौलुस ने इस दौरान, संभवतः मकिदुनिया से, 1 तीमुथियुस, तीतुस (और इब्रानियों) की पत्रियाँ लिखीं** ताकि इफिसुस में तीमुथियुस और क्रेते में तीतुस को प्रोत्साहित किया जा सके।

पौलुस का दूसरा रोम का कारावास, अंतिम दिन और शहादत (ईस्वी सन् 67-ईस्वी सन् 68)

एक बार जब पौलुस रोम वापस लौटा, तो उसे कैद कर लिया गया। वहाँ से **पौलुस ने अपनी अंतिम पत्री, '2 तीमुथियुस' लिखी।**

तीमुथियुस ने लगभग 18 वर्षों (ईस्वी सन् 49 से ईस्वी सन् 67) तक पौलुस के साथ मिलकर सेवा की। इस समय तक तीमुथियुस की **आयु लगभग 34 वर्ष** रही होगी और उसे **इफिसुस की कलीसिया की देखरेख सौंपी गई थी।** संभवतः इफिसुस की कलीसिया अन्य कलीसियाओं के लिए एक प्रकार का आत्मिक मुख्यालय भी रही होगी। संभवतः इफिसुस की कलीसिया अन्य कलीसियाओं के लिए एक प्रकार का आत्मिक मुख्यालय भी रही होगी। उस क्षेत्र की अन्य कलीसियाएं (स्मुरना, पिरगमुन, थुआतीरा, सरदीस, फिलदिलफिया, लौदीकिया) भी इसी क्षेत्र में थीं। अतः युवा तीमुथियुस पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी थी।

1 तीमुथियुस, ईस्वी सन् 67 के लगभग, मकिदुनिया से तीमुथियुस को लिखी गई थी।

1 तीमुथियुस 1:1-4
[1]पौलुस की ओर से जो हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर और हमारी आशा के आधार मसीह यीशु की आज्ञा से मसीह यीशु का प्रेरित है,
[2]तीमुथियुस के नाम जो विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र है: पिता परमेश्वर, और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह, और दया और शान्ति मिलती रहे।
[3]जैसे मैं ने मकिदुनिया को जाते समय तुझे समझाया था, कि इफिसुस में रहकर कुछ लोगों को आज्ञा दे कि अन्य प्रकार की शिक्षा न दें,
[4]और उन कहानियों और अनन्त वंशावलियों पर मन न लगाएँ, जिनसे विवाद होते हैं, और परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार नहीं, जो विश्वास पर आधारित है। वैसे ही फिर भी कहता हूँ।

- **वचन 1**:

प्रेरित
प्रेरित का अर्थ है "भेजा गया व्यक्ति", और कार्य के संदर्भ में, वह व्यक्ति है जो परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने के लिए एक अगुवे के रूप में आगे बढ़ता है।

परमेश्वर की आज्ञा से
आपका बुलावा एक "आज्ञा" है।

- **वचन 1-2:**

परमेश्वर... और प्रभु यीशु मसीह
यहाँ पौलुस परमेश्वरत्व के दो व्यक्तियों का उल्लेख करता है। हम पिता परमेश्वर, पुत्र परमेश्वर और पवित्र आत्मा परमेश्वर पर विश्वास करते हैं।

परमेश्वर हमारा उद्धारकर्ता, हमारा पिता... यीशु मसीह हमारी आशा, हमारा प्रभु
यह पहचानना अच्छा है कि परमेश्वर क्या है और हमारे लिए उसका क्या अर्थ है। वह हमारा उद्धारकर्ता, हमारा पिता, हमारी आशा, हमारा प्रभु, हमारा चंगा करने वाला, हमारा छुड़ाने वाला, हमारा प्रदाता है...

- **वचन 3-4:**

[3]... इफिसुस में रहकर कुछ लोगों को आज्ञा दे कि अन्य प्रकार की शिक्षा न दें,
[4] और उन कहानियों और अनन्त वंशावलियों पर मन न लगाएँ, जिनसे विवाद होते हैं, और परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार नहीं, जो विश्वास पर आधारित है।

यह निगरानी करना महत्वपूर्ण है कि लोगों को क्या सिखाया जा रहा है (सिद्धान्त) और लोगों को किस बात पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कहा जा रहा है। जैसा कि हम इस पत्री को पढ़ते हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि किसी प्रकार की झूठी शिक्षा (या शिक्षाएं) जिनमें यहूदी कहानियों और नॉसटिक विचारों का मिश्रण था, उन्हें बढ़ावा दिया जा रहा था। पौलुस विश्वासियों को ऐसी झूठी शिक्षाओं से बचाना चाहता था।

ये कहानियाँ और अनन्त वंशावलियाँ केवल विवाद—कलह और विभाजन का कारण बन रही थीं।

खरी शिक्षा विश्वास में "परमेश्वर की उन्नति" लाती है—अर्थात् विश्वासियों के विश्वास का आत्मिक निर्माण।

अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के अंत में (ई.पू. 58 में), पौलुस ने इफिसुस के चर्च के अगुवों को पहले ही चेतावनी दे दी थी। यह 1 तीमुथियुस लिखे जाने से लगभग 9 वर्ष पहले की बात थी।

प्रेरितों 20:28-32
[28]इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है।
[29]मैं जानता हूँ कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेडिए तुम में आएँगे जो झुण्ड को न छोड़ेंगे।
[30]तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे–ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी–मेढ़ी बातें कहेंगे।
[31]इसलिये जागते रहो, और स्मरण करो कि मैं ने तीन वर्ष तक रात दिन आँसू बहा–बहाकर हर एक को चितौनी देना न छोड़ा।
[32]और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूँ; जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है और सब पवित्र किए गए लोगों में साझी करके मीरास दे सकता है।

बाद में, रोम में कैद के दौरान, लगभग ईस्वी 63 में इफिसियों को लिखे अपने पत्र में, वह चाहते थे कि विश्वासी आत्मिक रूप से इतने मजबूत बनें कि *"हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से उनके भ्रम की युक्तियों के और उपदेश के हर एक झोंके से उछाले और इधर-उधर घुमाए जाते हों"* (इफिसियों 4:14)।

1 तीमुथियुस 1:5-7
[5]आज्ञा का सारांश यह है कि शुद्ध मन और अच्छे विवेक, और कपटरहित विश्वास से प्रेम उत्पन्न हो।

[6]इनको छोड़कर कितने लोग बकवाद की ओर भटक गए हैं,
[7]और व्यवस्थापक तो होना चाहते हैं, पर जो बातें कहते और जिनको दृढ़ता से बोलते हैं, उनको समझते भी नहीं।

- **वचन 5-7**

परमेश्वर हमसे क्या चाहता है (अर्थात आज्ञा का उद्देश्य): प्रेम।
परन्तु प्रेम का प्रवाह एक शुद्ध हृदय, एक अच्छे विवेक और एक निष्कपट विश्वास से होना चाहिए। यदि हम अपना ध्यान इस पर केंद्रित नहीं रखते हैं, तो हम भटक रहे हैं—यानी मुख्य बात और केंद्र बिंदु से विचलित होकर अन्य अनावश्यक चीजों में उलझ रहे हैं।

शुद्ध हृदय: इरादों में पवित्रता, कोई स्वार्थ नहीं, और कोई व्यक्तिगत एजेंडा नहीं।
अच्छा विवेक: या एक साफ अंतःकरण वह है जहाँ आप परमेश्वर और मनुष्य के सामने जो सही है, उसके अनुसार जीवन जीते हैं।
निष्कपट विश्वास: वास्तविक और सच्चा विश्वास। ऐसा विश्वास नहीं जो लोगों के सामने केवल दिखावे या ढोंग के लिए किया जाए।

इसलिए विश्वासियों के रूप में, आइए हम इसी पर बने रहें: एक शुद्ध हृदय, एक अच्छा या साफ विवेक और एक निष्कपट विश्वास।

1 तीमुथियुस 1:8-11
[8] पर हम जानते हैं कि यदि कोई व्यवस्था को उचित रीति से काम में लाए तो वह भली है।
[9]यह जानकर कि व्यवस्था धर्मी जन के लिये नहीं पर अधर्मियों, निरंकुशों, भक्तिहीनों, पापियों, अपवित्र और अशुद्ध मनुष्यों, माँ–बाप के घात करनेवालों, हत्यारों,
[10]व्यभिचारियों, पुरुषगामियों, मनुष्य के बेचनेवालों, झूठ बोलनेवालों, और झूठी शपथ खानेवालों, और इनके अतिरिक्त खरे उपदेश के सब विरोधियों के लिये ठहराई गई है।
[11]यही परमधन्य परमेश्वर की महिमा के उस सुसमाचार के अनुसार है जो मुझे सौंपा गया है।

- **वचन 8-11:**

परमेश्वर की व्यवस्था भली है क्योंकि इसका उद्देश्य हमें गलत काम करने से रोकना है।

ऐसी कोई भी बात जो इन पापों को "ठीक" बताती है, वह "खरी शिक्षा के विरुद्ध" है और महिमापूर्ण सुसमाचार के विपरीत है।

हालाँकि हम इस बात से अवगत हैं कि हमें सभी पापों से दूर रहना चाहिए, फिर भी हम अपना ध्यान पद 10 की ओर लाना चाहते हैं।

पद 10: "...व्यभिचारियों और समलैंगिक..." (ESV संस्करण के अनुसार)

इसलिए, किसी भी प्रकार की शिक्षा जो यह कहती है कि यौन अनैतिकता या समलैंगिकता सही है, वह "खरी शिक्षा के विरुद्ध" है और महिमापूर्ण सुसमाचार के विपरीत है।

1 तीमुथियुस 1:12-17
[12]मैं अपने प्रभु मसीह यीशु का जिसने मुझे सामर्थ्य दी है, धन्यवाद करता हूँ कि उसने मुझे विश्वासयोग्य समझकर अपनी सेवा के लिये ठहराया।

[13]मैं तो पहले निन्दा करनेवाला, और सतानेवाला, और अन्धेर करनेवाला था; तौभी मुझ पर दया हुई, क्योंकि मैं ने अविश्वास की दशा में बिन समझे बूझे ये काम किये थे।
[14]और हमारे प्रभु का अनुग्रह उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में है, बहुतायत से हुआ।
[15]यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया, जिनमें सबसे बड़ा मैं हूँ।
[16]पर मुझ पर इसलिये दया हुई कि मुझ सबसे बड़े पापी में यीशु मसीह अपनी पूरी सहनशीलता दिखाए, कि जो लोग उस पर अनन्त जीवन के लिये विश्वास करेंगे उनके लिये मैं एक आदर्श बनूँ।
[17]अब सनातन राजा अर्थात् अविनाशी, अनदेखे, एकमात्र परमेश्वर का आदर और महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

पौलुस अपने स्वयं के जीवन और बुलाहट पर विचार करता है।

- **वचन 12:**

उसने मुझे विश्वासयोग्य समझा और अपनी सेवा में नियुक्त किया।
परमेश्वर विश्वासयोग्यता को देखता है।

- **वचन 14:**

हमारे प्रभु का अनुग्रह बहुत अधिकता से हुआ
परमेश्वर हमारे प्रति अपने अनुग्रह और दया में उदार है... चाहे हमने कुछ भी किया हो। पौलुस इस बात की गवाही देता है।

- **वचन 15:**

...मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए जगत में आया, जिनमें सबसे बड़ा मैं हूँ।
अद्भुत! इतने वर्षों की महान प्रेरिताई सेवा के बाद भी, पौलुस का ध्यान केवल एक मुख्य बात पर केंद्रित है—कि यीशु मसीह हम पापियों को बचाने के लिए आया, और वह स्वयं को पापियों में सबसे बड़ा कहता है...

- **वचन 16-17:**

परमेश्वर ने मेरे जीवन में जो किया वह उसके प्रचुर अनुग्रह और महान सहनशीलता का एक उदाहरण और नमूना है, ताकि उन लोगों को प्रोत्साहित किया जा सके जो उस पर विश्वास करेंगे। इसके बाद पौलुस परमेश्वर की स्तुति करने लगता है।

1 तीमुथियुस 1:18-20
[18]हे पुत्र तीमुथियुस, उन भविष्यद्वाणियों के अनुसार जो पहले तेरे विषय में की गई थीं, मैं यह आज्ञा सौंपता हूँ कि तू उनके अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ते रह,
[19]और विश्वास और उस अच्छे विवेक को थामे रह, जिसे दूर करने के कारण कितनों का विश्वास रूपी जहाज डूब गया।
[20]उन्हीं में से हुमिनयुस और सिकन्दर हैं, जिन्हें मैं ने शैतान को सौंप दिया है कि वे परमेश्वर की निन्दा करना न सीखें।

- **वचन 18:**

अपने जीवन के विषय में कही गई भविष्यद्वाणियों का उपयोग करें। उनका उपयोग अच्छी लड़ाई लड़ने के लिए करें। शत्रु के विरुद्ध आत्मिक युद्ध में उनका उपयोग करें। पौलुस इस पत्री में आगे चलकर फिर से इन भविष्यद्वाणियों का उल्लेख करता है (1 तीमुथियुस 4:14, 2 तीमुथियुस 1:6)।

- **वचन 19:**

एक बार फिर, अच्छे विवेक के साथ विश्वास को थामे रहने का स्मरण दिलाया गया है। अच्छे विवेक का सीधा अर्थ है—परमेश्वर और मनुष्यों के सामने सही जीवन जीना।

यदि मैं अच्छे विवेक को त्याग देता हूँ—अर्थात् वे काम करता हूँ जिन्हें मेरा विवेक गलत कहता है—तो मेरा विश्वास रूपी जहाज डूब जाएगा (मैं अपने स्वयं के विश्वास को नष्ट कर दूँगा)।

- **वचन 20:**

प्रेरिताई न्याय हुमिनयुस का उल्लेख 2 तीमुथियुस 2:17 में फिर से मिलता है, जहाँ फिलेतुस के साथ उसका नाम एक बहुत ही खतरनाक व्यक्ति के रूप में आता है। हुमिनयुस द्वारा प्रचारित सिद्धान्तों में से एक यह था कि "पुनरुत्थान हो चुका है" (2 तीमुथियुस 2:18)। 2 तीमुथियुस 4:14 में, सिकन्दर नामक ताँबे का काम करने वाले व्यक्ति का उल्लेख है जिसने पौलुस को "बहुत हानि" पहुँचाई थी, और संभव है कि यह वही सिकन्दर हो। पौलुस ने इन दोनों व्यक्तियों को शैतान को सौंप दिया। पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 5:5 में भी ऐसा ही कुछ किया था। हम समझते हैं कि इन व्यक्तियों को कलीसिया की संगति से बहिष्कृत कर दिया गया था और वे अब कलीसियाई नेतृत्व की आत्मिक देखरेख में नहीं थे। इसका उद्देश्य यह था कि किसी तरह उन्हें यह अहसास हो जाए कि वे जो कर रहे हैं वह गलत है।

मुख्य सार: हमें शुद्ध मन, अच्छे विवेक और निष्कपट विश्वास के साथ जीना चाहिए और प्रेम करना चाहिए।

उपयोगी संसाधन

हर रविवार सुबह 10:30 बजे (भारतीय समय, GMT+5:30) हमारी ऑनलाइन संडे चर्च सेवा का लाइव प्रसारण देखें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त आराधना, वचन और चंगाई, चमत्कार तथा छुटकारे की सेवा।
यूट्यूब:https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
वेबसाइट: https://apcwo.org/live

हमारी अन्य वेबसाइट्स और निःशुल्क संसाधन:
चर्च: https://apcwo.org
निःशुल्क संदेश: https://apcwo.org/resources/sermons
निःशुल्क पुस्तकें: https://apcwo.org/books/Hindi
दैनिक भक्ति-वचन: https://apcwo.org/resources/daily-devotional
यीशु मसीह: https://examiningjesus.com
बाइबल कॉलेज: https://apcbiblecollege.org
ई-लर्निंग: https://apcbiblecollege.org/elearn
वीकेंड स्कूल्स: https://apcwo.org/ministries/weekend-schools
काउंसलिंग: https://chrysalislife.org
संगीत: https://apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: https://pamfi.org
चर्च ऐप: https://apcwo.org/app
चर्चेस: https://apcwo.org/ministries/churches
विश्व मिशन: https://apcworldmissions.org